Gandhi Research Foundation
Jalgaon

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

# जिनागम

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

## समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष - 14, अंक - 10, अप्रैल 2012, सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ - 112 मूल्य - 150 रूपए प्रति

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा

इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

'महावीर जयंती' की हार्दिक शुभकामनायें

Now Visit Jinagam - www.jinagam.org

# जलगाँव में राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्र को समर्पित गाँधी तीर्थ'

## राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील ने सूत कताई कर 'गाँधी तीर्थ' में रचनात्मक कार्यक्रमों की शुरुआत की और गाँधी विचार को आत्मसात् करने के लिए युवकों का किया आह्वान!

**जलगाँवः** गाँधी व्यक्ति नहीं, विचार है जो सत्य आधारित होने के कारण आज भी समीचीन हैं। आज के युवाओं को उनके विचारों को समझने की आवश्यकता है। श्री भंवरलाल जी ने कई उद्योगों की स्थापना की, किन्तु आने वाली पीढ़ियाँ उन्हें इस 'गाँधी तीर्थ' की स्थापना के लिए याद रखेगी। ये उद्‌गार भारत के राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने 'गाँधी तीर्थ' के उद्‌घाटन के पश्चात आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए प्रकट किये। महात्मा गाँधी के इस भव्य स्मारक के लोकार्पण के पश्चात जलगाँव विश्व के मानचित्र पर गाँधी तीर्थ के लिए जाना जाएगा। इस अवसर पर महाराष्ट्र के राज्यपाल के. नारायणन्, वरिष्ठ शिक्षाशास्त्री देवी सिंह शेखावत, गाँधी रिसर्च फाऊंडेशन के चेयरमैन न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी, संस्थापक भंवरलाल जैन, संचालक डी. आर. मेहता, महात्मा गांधी के प्रपौत्र तुषार गाँधी, श्रीलंका के गाँधी नाम से विख्यात प्रसिद्ध सर्वोदयी नेता डॉ. ए.टी. अरियरत्ने, वरिष्ठ गाँधीयन एच.एस. दोराईस्वामी, नारायणराव जवरे जैसे गणमान्य मंच पर उपस्थित थे। श्रीमती पाटील ने सबसे पहले 'गाँधी तीर्थ' परिसर में स्थित महात्मा गांधी की भव्य प्रतिमा का अनावरण किया। इस समारोह में भारत के कोने-कोने से आये गाँधीजनों ने भाग लिया।

राष्ट्रपति श्रीमती पाटील ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए आगे कहा कि युवा पीढ़ी और नारी शक्ति को गाँधी विचार से जोड़कर देश की दिशा और दशा निर्धारित करनी होगी। इस समय अपने देश में युवाओं की संख्या सर्वाधिक होने के कारण उनका भविष्य उज्ज्वल है। इन युवकों को परिश्रम का महत्व समझाते हुए उनके चरित्र का निर्माण करने की आवश्यकता है। कोई भी व्यक्ति जन्म से नहीं, कर्म से बड़ा होता है। इसलिए युवाओं का रुझान कर्म के प्रति हो, इसका प्रयत्न करना चाहिए। इसमें गाँधी-विचार अपनी अहम भूमिका निभा सकता है। यह 'गांधी तीर्थ' युवाओं को गढ़ने में मददगार

महात्मा गाँधी के भव्य स्मारक लोकार्पण के पश्चात जलगाँव विश्व के मानचित्र पर राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील द्वारा गांधी तीर्थ राष्ट्र के नाम समर्पित। उद्‌घाटन अवसर पर उपस्थित कई गणमान्य व्यक्ति

साबित होगा, इसका मुझे विश्वास है। गाँधीजी का लोगों ने एक से अधिक बार विरोध किया किन्तु इस विरोध से वे डगमगाये नहीं, अपितु अन्तर्मन से और अधिक मजबूत होते गये। उन्होंने अपने आंदोलन को अहिंसा से जोड़ कर विरोध का नया प्रतिमान स्थापित किया। विश्व के लोगों का नैतिक और आध्यात्मिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया, उन्होंने स्वतंत्रता-आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए उन्हें सशक्त बनाया। इसी कारण उनके आह्वान पर हजारों महिलाओं ने आजादी की मुहिम में भाग लिया। इसी प्रकार युवकों को भी महात्मा गाँधी ने आंदोलन से जोड़ा और उनकी ऊर्जा का उपयोग देश को स्वतंत्र कराने के लिए किया।

महात्मा गांधी के प्रपौत्र तुषार गाँधी ने आशा व्यक्त की कि आने वाले दिनों में गाँधी तीर्थ, ज्ञान तीर्थ के रुप में बन कर उभरेगा, यह राष्ट्रीय ऊर्जा का ऐसा केन्द्र बनें, इसके लिए मेरी शुभकामनाएँ हैं। गाँधी रिसर्च फाऊंडेशन के चेयरमैन न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'गाँधी तीर्थ' के संस्थापक भंवरलाल जैन से मेरी पहली मुलाकात उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ के प्रथम दीक्षांत समारोह में हुई थी। उस समारोह को सम्बोधित करते हुए मैंने यह आशा व्यक्त की है कि इस कान्हदेश में भी एक गाँधी अध्ययन केन्द्र होना चाहिए। मेरे इस आह्वान को भंवरलाल जैन ने स्वीकार किया। उसका प्रतिफल यह 'गांधी तीर्थ' है। उसी दिन वे मेरे पास आये और 'गांधी रिसर्च फाऊंडेशन' की स्थापना की बात की और मेरे कंधों पर इसके चेयरमैनशिप का भार डाल दिया। उनके निवेदन को मैं अस्वीकार नहीं कर सका। हमने मिलकर गाँधी रिसर्च फाऊंडेशन का निर्माण किया। जिस प्रकार दिल्ली भारत की राजधानी है, मुम्बई को आर्थिक राजधानी के रुप में जाना जाता है, ठीक उसी प्रकार आने-वाले दिनों में जलगाँव को गाँधी विचार की राजधानी के रुप में जाना जाएगा। आगे उन्होंने कहा कि हमारे राष्ट्रपिता ने सूत कताई कर हमारे सामने खादी का लक्ष्य रखा है। उन्होंने ही खादी का वस्त्र पहनकर 'राष्ट्रीय वस्त्र' का गौरव प्रदान किया है।

संस्थापक भंवरलाल जैन ने बताया कि जब मैं राष्ट्रपति जी से मिला तो उन्होंने कहा कि भाऊ, आपने अपने जीवन में कई कार्य किये, किन्तु उसमें सबसे महान कार्य 'गाँधी तीर्थ' का निर्माण है। इस समय मेरी उम्र 75 वर्ष है। बहुत पहले मैंने एक स्वप्न देखा था, उसे अब साकार कर सका। 'गाँधी तीर्थ' पर हर दिन कोई न कोई कार्यक्रम होता रहे, यह मेरी आकांक्षा है। इस कार्यक्रम में 250 वरिष्ठ गाँधी जन उपस्थित हैं, यह इस क्षेत्र के साथ हमारा गौरव है। श्रीलंका के गाँधी नाम से प्रसिद्ध डॉ. ए.टी. अरियरत्ने, एच.एस. दोराईस्वामी आदि गाँधीजनों ने आकर हम पर उपकार किया है, मैं उपस्थित सभी गाँधीजनों का आभारी हूँ। 'गांधी तीर्थ' से जुड़ी कुछ अहम बातें उल्लेखनीय हैं। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील ने गाँधी प्रदर्शनी पर 17 मिनट

शेष पृष्ठ 80 पर...

पृष्ठ 78 का शेष...राष्ट्रपति द्वारा...

का समय दिया। उन्होंने अपनी टिप्पणी में लिखा, मेरे जीवन का अप्रतिम क्षण, महात्मा गांधी के मौलिक विचारों का जीवन में अंगीकार करना ही सबसे सच्ची श्रद्धांजलि है। उनके विचारों को आत्मसात् करने से मुझे आत्मिक शांति मिलती है। राष्ट्रपति, राज्यपाल और अन्य लोगों के लिए बैटरी चालित वाहनों का उपयोग कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में पहल। सम्पूर्ण भारत से आये 250 से अधिक गांधी जनों की भागीदारी। गांधी तीर्थ पर राष्ट्रपति द्वारा अन्य गाँधीजनों के साथ सूत कताई राज्यपाल की अर्द्धांगिनी राधा शंकर नारायणन् की उपस्थिति सभी गणमान्य व्यक्तियों का सूती हार से स्वागत! समारोह के उपरांत स्वरुचि पूर्ण भोजन